सूरजमुखी की खेती

- खरीफ, रबी एवं जायद तीनो मौसम में
- मौसम एवं क्षेत्र की अनुकूलता के अनुसार प्रजातियों का चयन
- उन्नतशील प्रजातियों का शुद्ध बीज करें

प्रजातियाँ

संकुल प्रजातियां

क्र. सं	प्रजातियां	पकने की अवधि	उपज (कु./ हे.)
1.	माडर्न	80-85	8-15
2.	सूर्या	90-95	12-15
3.	टी.एन.ए.यू.एस.यू.एफ-7	85-90	10-17
4.	डी.आर.एस.एफ.-108	90-95	9-15
5.	डी.आर.एस.एफ.-113	90-98	10-15

संकर प्रजातियां

क्र. सं	प्रजातियां	पकने की अवधि	उपज (कु./ हे.)
1.	ज्वालामुखी	95-105	20-25
2.	के.बी.एस.एच.-1	90-95	15-20
3.	डी.आर.एस.एच. -1	95-105	15-20
4.	के.बी.एस.एच.- 44	88-92	14-16
5.	बी.एस.एच.-1	85-90	9-10

खेत की तैयारी

- अच्छे जल निकास वाली दोमट भूमि सर्वोत्तम
- पहली जुताई मिट्टी पलटने वाले हल से तथा बाद में दो-तीन जुताई देशी हल या कल्टीवेटर से
- खेत को भुरभुरा तथा समतल

बीज की मात्रा एवं बुवाई

- बुवाई जून के दूसरे पखवाड़े से जुलाई के मध्य तक
- जायद में फरवरी के अंत तक

बीज दर :

सामान्य या संकुल प्रजातियों में

- 10-12 किलोग्राम / हेक्टेयर

संकर प्रजातियों में

- 5-6 किलोग्राम / हेक्टेयर

बीज शोधन :

- बीज को 2 ग्राम थीरम या 2 ग्राम कार्बेन्डाजिम से / किलोग्राम बीज

- बुवाई हल के पीछे कूंडो में 3-4 सेंटीमीटर की गहराई पर
- लाइन से लाइन की दूरी 60 सेंटीमीटर
- पौधे से पौधे की दूरी 30 सेंटीमीटर

खाद एवं उर्वरक

- संतुलित उर्वरको का प्रयोग करना आवश्यक
- आख़िरी जुताई में 250-300 कुंतल सड़ी गोबर की खाद
- मृदा परीक्षण के आधार पर उर्वरको का प्रयोग

उर्वरक :

- नत्रजन : 60-80 किलोग्राम
- फास्फोरस : 60 किलोग्राम
- पोटाश : 40 किलोग्राम

- नत्रजन की एक तिहाई मात्रा, फास्फोरस एवं पोटाश की पूरी मात्रा कूड़ों में
- नत्रजन की शेष मात्रा को दो बार में टॉप ड्रेसिंग के रूप में
- पहली टॉप ड्रेसिंग बुवाई के 30 दिन बाद, दूसरी बुवाई के 45 दिन बाद

सिचाई

- फसल में कली आने पर, फूल खिलने पर तथा दाना भरने की अवस्था में खेत में पर्याप्त नमी की आवश्यकता
- अधिक नमी तथा जल भराव होने पर पौधों में जड़ गलन की सम्भवना

खरपतवार नियंत्रण

- 2 निराई-गुड़ाई की आवश्यकता पड़ती है
- पहली निराई-गुड़ाई बुवाई के 30-35 दिन बाद
- दूसरी निराई-गुड़ाई 55-60 दिन बाद
- पेंडामेथालीन 30% प्रतिशत की 3.3 लीटर / हेक्टेयर

रोग नियंत्रण

- आल्टरनेरिया पर्ण दाग
- मुण्डक सड़न या राइजोपस हेड रॉट

आल्टरनेरिया पर्ण दाग रोग :

- निचली पत्तियों पर गहरे भूरे व काले रंग के गोल, अंडाकार धब्बे
- संक्रमण कटोरी फूल पर होने से ये सूखकर गिर जाते है तथा बीज नहीं भरते है

नियंत्रण :

- बीज शोधन
- रोग रहित बीजो का प्रयोग
- रोग की प्रारंभिक अवस्था में डाइथेन एम-45 या कापर आक्सीक्लोराइड की 0.3% 7-10 दिन के अंतराल पर 2-3 छिड़काव

मुण्डक सड़न रोग :

- मुण्डक या फूल के पीछे और पुष्प डंठल पर भूरे अनियमित आकार के धब्बे
- मुण्डक के पीछे का ग्रसित भाग कोमल गूदेदार होकर सड़ जाता है तथा मुण्डक सूख जाता है।

नियंत्रण :

- बीज शोधन
- कापर आक्सीक्लोराइड की 0.3 % मात्रा को 7-10 दिन के अंतराल पर 2-3 छिड़काव

कीट नियंत्रण

- एफिड
- जैसिडस
- सफेद मक्खी
- थ्रिप्स
- चने की फलीबेधक कीट

तना छेदक तथा जैसिडस :

- प्रौढ़ एवं शिशु दोनों हानिकारक
- कीट पौधों के कोमल भागों से रस चूसते है
- पौधे की बढ़वार पर विपरीत असर

रोकथाम :

- फसल की बुवाई समय पर
- मिथाइल आक्सीडेमेटान 25 ईसी या क्लोरपायरीफास 20 ईसी दवा की 750-1000 मिलीलीटर / हेक्टेयर

सफेद मक्खी कीट :

- शिशु एवं प्रौढ़ पत्तियों से रस चूसते हैं।
- सफेद मक्खी विषाणु रोग (पीला मोजेक) का वाहक
- अधिक प्रकोप की स्थिति में पौधों की बढ़वार रुक जाती है।

रोकथाम :

- फसल की बुवाई समय पर
- मिथाइल आक्सीडेमेटान 25 ईसी या क्लोरपायरीफास 20 ईसी दवा की 750-1000 मिलीलीटर / हेक्टेयर

थ्रिप्स :

- प्रौढ़ छोटे, पतले तथा गहरे रंग के
- शिशु एवं प्रौढ़ पत्तियों एवं फूलों से रस चूसते हैं
- पत्तियों में छोटे-छोटे सफेद-भूरे रंग के बिन्दु बनते हैं
- उग्र प्रकोप पर पत्तियाँ सूख जाती हैं

रोकथाम :

- फसल की बुवाई समय पर
- मिथाइल आक्सीडेमेटान 25 ईसी या क्लोरपायरीफास 20 ईसी दवा की 750-1000 मिलीलीटर / हेक्टेयर

चने की फलीबेधक कीट :

- सुड़ियां मुण्डक में बन रहे बीजो को खाकर हानि पहुचती है।

रोकथाम :

- 10-12 फेरोमोन ट्रैप प्रति हेक्टेयर की दर से लगाना चाहिये ।
- फेनवेलरेट कीटनाशक की 750 मिलीलीटर मात्रा / हेक्टेयर

कटाई एवं उपज

- फूल के पीछे का भाग पीला होने पर फसल की कटाई

उपज :

- संकुल प्रजातियों से 12-15 क्विंटल / हेक्टेयर
- संकर प्रजातियों से 20-22 क्विंटल / हेक्टेयर